ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
गोविंद बल्लभ पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
उधम सिंह नगर, पंतनगर, उत्तराखंड

मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 03-12-2024

उधम सिंह नगर(उत्तराखंड) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2024-12-03 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2024-12-04	2024-12-05	2024-12-06	2024-12-07	2024-12-08
वर्षा (मिमी)	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
अधिकतम तापमान(से.)	26.0	25.0	24.0	23.0	22.0
न्यूनतम तापमान(से.)	9.0	8.0	6.0	5.0	5.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	92	90	92	94	92
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	78	75	78	75	74
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	5	6	7	7	5
पवन दिशा (डिग्री)	330	320	320	320	330
क्लाउड कवर (ओक्टा)	0	0	0	0	0

मौसम सारांश / चेतावनी:

पिछले सात दिनों (26 नवंबर से 2 दिसंबर) में 0.0 मिमी वर्षा दर्ज की गई और अधिकतम और न्यूनतम तापमान 25.2 से 27.0 डिग्री सेल्सियस और 8.4 से 10.1 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा। पिछले सप्ताह मौसम साफ रहा। सुबह 0712 बजे सापेक्ष आर्द्रता 88 से 95% और शाम 1412 बजे सापेक्ष आर्द्रता 35 से 49% के बीच रही। हवा की गति 0.7 से 1.5 किमी प्रति घंटा थी और हवा की दिशा अधिकतर पश्चिम, पश्चिम-उत्तर-पश्चिम, दक्षिण-दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम और पश्चिम-उत्तर-पश्चिम थी। आगामी 5 दिनों के पूर्वानुमान में वर्षा का कोई अंदेशा नहीं है। अधिकतम और न्यूनतम तापमान 22.0-26.0 डिग्री सेल्सियस और 5.0-9.0 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। 5-7 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं अधिकतर उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम-उत्तर दिशा से चलेंगी।

सामान्य सलाहकार:

छेत्र में मौसम की स्थिति के बारे में नियमित अपडेट के लिए, किसान "मेघदूत" ऐप से अपडेट प्राप्त कर सकते हैं और गूगल प्ले स्टोर (एंड्रॉ इड उपयोगकर्ता) और ऐप सेंटर (आईओएस उपयोगकर्ता) पर उपलब्ध दामिनी" ऐप से बिजली की स्थिति के बारे में अपडेट प्राप्त कर सकते हैं। एनडीवीआई राज्य के अलग-अलग क्षेत्रों में 0.10-0.30 के बीच अच्छी कृषि शक्ति दर्शाता है। 29.11.2024 से 05.12.2024 के दौरान भारी कमी वाली वर्षा और सामान्य अधिकतम-न्यूनतम तापमान की प्रवृत्ति है।

लघु संदेश सलाहकार:

आगामी सप्ताह में शुष्क मौसम का पूर्वानुमान है, इसलिए आवश्यकतानुसार सिंचाई की जानी चाहिए तथा रबी/शीतकालीन फसलों की बुवाई की जानी चाहिए।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
गन्ना	पेड़ी गन्ने की कटाई करनी चाहिए ताकि गेहूं की बुआई हो सके और शरदकालीन गन्ने की सिंचाई आवश्यकतानुसार करनी चाहिए। खेती की अन्य गतिविधियों जैसे निराई और गुड़ाई की नियमित

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
	निगरानी की जानी चाहिए।
अरहर (लाल चना/ अरहर)	खड़ी फसलों में, आवश्यकता के अनुसार सिंचाई की जानी चाहिए, जबकि देर से पकने वाली किस्मों में, फली छेदक की उपस्थिति पर अनुशंसित प्रथाओं को अपनाया जाना चाहिए।
चना	देर से बुआई होने वाली किस्मो को महीने के पहले पखवाड़े तक बो लेना चाहिए। देर से बुआई में लाइन से लाइन की दूरी 15-20 सेमी रखनी चाहिए जबकि बुआई के समय बीज का जैव उपचार 200 ग्राम राइजोबियम एवं पीएसबी प्रति 10 किलोग्राम बीज से करना चाहिए। पिछले माह में जो फसल बोई गई है उसकी निरंतर निगरानी के साथ तदनुसार खेती का कार्य किया जाना चाहिए ।
मसूर की दाल	देर से बुआई होने वाली किस्मो को महीने के पहले पखवाड़े तक बो लेना चाहिए। देर से बुआई में लाइन से लाइन की दूरी 15-20 सेमी रखनी चाहिए जबकि बुआई के समय बीज का जैव उपचार 200 ग्राम राइजोबियम एवं पीएसबी प्रति 10 किलोग्राम बीज से करना चाहिए। पिछले माह में जो फसल बोई गई है उसकी निरंतर निगरानी के साथ तदनुसार खेती का कार्य किया जाना चाहिए ।
रेपसीड	देर से बोई गई फसलों की निगरानी की जानी चाहिए और फूल आने से पहले हल्की सिंचाई की जानी चाहिए। सिंचाई के बाद नाइट्रोजन की टॉप ड्रेसिंग करनी चाहिए।
सरसों	देर से बोई गई फसलों की निगरानी की जानी चाहिए और फूल आने से पहले हल्की सिंचाई की जानी चाहिए। सिंचाई के बाद नाइट्रोजन की टॉप ड्रेसिंग करनी चाहिए।
गेहूँ	फसल की देर से बुआई 25 दिसम्बर तक करनी चाहिए तथा उचित उपचारित बीज एवं बुआई विधि अपनानी चाहिए। पहले से बोई गई फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन की आधी मात्रा पहली सिंचाई के बाद डालनी चाहिए।
जौ	फसल की देर से बुआई माह के प्रथम पखवाड़े तक करनी चाहिए तथा उचित उपचारित बीज एवं बुआई विधि अपनानी चाहिए।
फील्ड पी	देर से बुआई होने वाली किस्मो को महीने के पहले पखवाड़े तक बो लेना चाहिए। देर से बुआई में लाइन से लाइन की दूरी 15-20 सेमी रखनी चाहिए जबकि बुआई के समय बीज का जैव उपचार 200 ग्राम राइजोबियम एवं पीएसबी प्रति 10 किलोग्राम बीज से करना चाहिए। पिछले माह में जो फसल बोई गई है उसकी निरंतर निगरानी के साथ तदनुसार खेती का कार्य किया जाना चाहिए ।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
गोभी	फूलगोभी में हल्की सिंचाई करनी चाहिए। कोल फसलों में पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण के लिए मैंकोजेब 75 डब्लूपी का 2-3 बार प्रयोग करना चाहिए। रोग को नियंत्रित करने के लिए गर्म पानी से बीजोपचार करना चाहिए।
टमाटर	टमाटर की ऊपरी पत्तियों के सिकुड़ने या चित्तकबरा होने पर संक्रमित पौधों को हटाकर नष्ट कर देना चाहिए। फसल में रोग फैलाने वाले कीड़ों की जाँच की जानी चाहिए और तदनुसार नियंत्रित किया जाना चाहिए।
मूली	यूरोपियन किस्म को 6-8 किग्रा/हेक्टेयर तथा एशियाई किस्म को 10-12 किग्रा/हेक्टेयर की दर से बोया जा सकता है, जबकि पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20-25 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 8-10 सेमी होनी चाहिए।
शिमला मिर्च	नर्सरी में बुआई की जा सकती है और 4-8 सप्ताह बाद पौधों की रोपाई की जा सकती है।
गाजर	यूरोपियन किस्म को 5-6 किग्रा/हेक्टेयर की दर से बोया जा सकता है, लाइन से लाइन की दूरी 20-40 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 5-7 सेमी होनी चाहिए।
चुकंदर	यूरोपियन किस्म को 7-10 किग्रा/हेक्टेयर की दर से बोया जा सकता है, लाइन से लाइन की दूरी 30-45 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 10-15 सेमी होनी चाहिए।
सब्जी पीईए	बुवाई 80-120 किग्रा/हेक्टेयर की दर से की जा सकती है, लाइन से लाइन की दूरी 30-45 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 5-10 सेमी होनी चाहिए। बढ़ती फसल की निगरानी की जानी चाहिए।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भेंस	पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सूखी घास, धान के अवशेष (पुवाल) आदि जो पशुओं के चारे के रूप में उपयोग नहीं किए जाते हैं, उन्हें शेड में पशुओं के लिए बिस्तर सामग्री के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए। दरवाजे और खिड़की को अच्छी तरह से ढक देना चाहिए ताकि ठंडी हवा पशुशाला में प्रवेश न

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
	कर सके। पशुओं के बैठने के स्थान को समतल करना चाहिए। सलाह दी जाती है कि हरे चारे को सूखे चारे में मिलाकर पशुओं को दिया जा सकता है अन्यथा पशु टिम्पेटी रोग से संक्रमित हो सकते हैं जिससे पशुओं की मृत्यु हो जाती है।
गाय	पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सूखी घास, धान के अवशेष (पुवाल) आदि जो पशुओं के चारे के रूप में उपयोग नहीं किए जाते हैं, उन्हें शेड में पशुओं के लिए बिस्तर सामग्री के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए। दरवाजे और खिड़की को अच्छी तरह से ढक देना चाहिए ताकि ठंडी हवा पशुशाला में प्रवेश न कर सके। पशुओं के बैठने के स्थान को समतल करना चाहिए। सलाह दी जाती है कि हरे चारे को सूखे चारे में मिलाकर पशुओं को दिया जा सकता है अन्यथा पशु टिम्पेटी रोग से संक्रमित हो सकते हैं जिससे पशुओं की मृत्यु हो जाती है।